श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

दशावतार स्तोत्र

(मीन अवतार)

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम् ।

विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ।

केशव ! धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥1॥

प्रलय के समय आपने बिना परिश्रम समुद्र धरण के लिए नौका की तरह चेष्टित मीन रूप धारण करके वेद शास्त्र की रक्षा की थी। हे मीन रूप धारी भगवान्! आपकी जय हो, जय हो ,जय हो।

(कूर्म अवतार)

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे

धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।

केशव ! धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥2॥

हे भगवान्! आपने अपने अति विपुलतर पीठ पर पृथ्वी को धारण किया था, इसी कारण आपके पृष्ठ पर व्रण (घाव) का चिह्न है, हे जगदीश ! आपकी जय हो ,जय हो ,जय हो।

(वराह अवतार)

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना ।

शशिनि कलंककलेव निमग्ना ।

केशव ! धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥3॥

हे केशव! आपने शूकर रूप धारण करके प्रलय के जल से पृथ्वी का निज दाँतों से उद्धार किया । इसी कारण आपके दाँतों में प्राप्त पृथ्वी कलंक रेखा के सदृश शोभायमान हो रही है। हे जगदीश! आपकी जय हो ,जय हो, जय हो।

(नृसिंह अवतार)

तव करकमलवरे नखमद्भुतश्रृंगम् ।

दलितहिरण्यकशिपुतनुभृगंम् ।

केशव ! धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥4॥

हे केशव ! आपने नृसिंह रूप धारण किया है। आपके श्रेष्ठ करकमलमें नखरूपी अदभुत श्रृंग विद्यमान है, जिससे हिरण्यकशिपु के शरीरको आपने ऐसे विदीर्ण कर दिया जैसे भ्रमर पुष्पका विदारण कर देता है, आपकी जय हो ॥4॥

(वामन अवतार)

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन ।

पदनखनीरजनितजनपावन ।

केशव! धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥5॥

हे केशव! आपने वामन रूप धारण करके बलि को छला था और आप ही ने अपने चरण कमलों से निकले हुए जल से समस्त लोगों को पवित्र किया था। हे भक्त जन रक्षक! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।।

(परशुराम अवतार)

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम् ।

स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ।

केशव ! धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥6॥

हे परशुराम रूप धारण करने वाले भगवान् ! आपने परशुराम रूप धारण कर कठोर आत्मा क्षत्रियों का विनाश करके उन्हीं के रुधिर से पृथ्वी को तृप्त किया था। हे जगदीश ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(राम अवतार)

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् ।

दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ।

केशव ! धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥7॥

हे श्रीहरे ! आपने समस्त लोगों पर दया करने के हेतु राम रूप धारण करके सभी देवताओं को प्रसन्न करने हेतु राक्षसराज रावण का संहार किया था, हे भगवान्! आपकी जय हो, जय हो, जय हो ॥7॥

(बलराम अवतार)

वहसि वपुषि विषदे वसनं(ञ्) जलदाभम् ।

हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ।

केशव! धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥8॥

हे भगवान्! आपने हलधर रूप धारण करके मेघ सदृश नील वस्त्र को धारण किया , तब आपके शुभांग में वह नीलवसन हलभीता यमुना का स्वरूप शोभायमान हुआ था । हे जगदीश ! आपकी जय हो ,जय हो, जय हो।

(बुद्ध अवतार)

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।

सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ।

केशव ! धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥9॥

हे जगदीश्वर! आपने ही जीवों पर दया करने हेतु बुद्ध रूप धारण करके पृथ्वी में जितने यज्ञ पशु हिंसा प्रधान हुआ करते थे उनकी निंदा की। हे बुद्धरूपधारी भगवन्!आपकी जय हो , जय हो जय हो ॥9॥

(कल्कि अवतार)

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।

धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।

केशव! धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥10॥

हे श्रीहरे ! आपने दुष्ट म्लेच्छों के नाश हेतु धूमकेतु स्वरूप खड्ग धारण किया था । हे कल्कि रूप भगवान् ! आपकी जय हो, जय हो जय हो ॥10॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।

श्रृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।

केशव ! धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥11॥

श्री जयदेव रचित यह स्तोत्र सब स्तोत्रों में श्रेष्ठ है। हे भक्तगण ! इसको भक्तिभाव युक्त प्रीतिपूर्वक आनंद से श्रवण करो ।हे दस अवतारों को धारण करने वाले भक्तजन दयालु ! आपकी जय हो, जय हो ,जय हो।

श्रीलक्ष्मीनृसिंहकरुणारस अथवा करावलम्बस्तोत्रम्

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतनचक्रपाणे
भोगीन्द्रभोगमणिराजितपुण्यमूर्ते ।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 1॥

ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुदर्ककिरीटकोटि-
सङ्घट्टिताङ्घ्रिकमलामलकान्तिकान्त ।
लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुहराजहंस
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 2॥

संसारघोरगहने चरतो मुरारे
मारोग्रभीकरमृगप्रचुरार्दितस्य ।
आर्तस्य मत्सरनिदाघसुदुःखितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 3॥

संसारकूपमतिघोरमगाधमूलं
सम्प्राप्य दुःखशतसर्पसमाकुलस्य ।
दीनस्य देव कृपया शरणागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 4॥

संसारसागरविशालकरालकाल-
नक्रग्रहग्रसितनिग्रहविग्रहस्य ।
व्यग्रस्य रागनिचयोर्मिनिपीडितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 5॥

संसारवृक्षमघबीजमनन्तकर्म-
शाखायुतं(ङ्) करणपत्रमनङ्गपुष्पम् ।
आरुह्य दुःखजलधौ चकितं(म्) पततो
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 6॥

संसारसर्पविषदिग्धमहोग्रतीव्र-
दंष्ट्राग्रकोटिपरिदष्टविनष्टमूर्तेः ।
नागारिवाहन सुधाब्धिनिवास शौरे
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 7॥

संसारदावदहनाकरभीकरोग्र-
ज्वालावलीभिरतिदग्धतनूरुहस्य ।
सरसीं शरणागतस्य, रुहमस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 8॥

संसारजालपतितस्य जगन्निवास
सर्वेन्द्रियार्थबडिशाग्रझषोपमस्य ।
प्रोत्कम्पितप्रचुरतालुकमस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 9॥

संसारभीकरकरीन्द्रकराभिघात-
निष्पीड्यमानवपुषः(स्) सकलार्तिनाश ।
प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 10॥

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य
चोरैर्महाबलिभिरिन्द्रियनामधेयैः ।
मोहान्धकारकुहरे विनिपातितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 11॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो
वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष ।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम् ॥ 12॥

यन्माययार्जितवपुः(फ्)प्रचुरप्रवाह-
मग्नार्थमत्र निवहोरुकरावलम्बम् ।
लक्ष्मीनृसिंहचरणाब्जमधुव्रतेन
स्तोत्रं(ङ्) कृतं(म्) सुखकरं(म्) भुवि शङ्करेण ॥ 13॥

संसारसागरनिमज्जनमुह्यमानं
दीनं(वॅ) विलोकय विभो करुणानिधे माम् ।
प्रह्लादखेदपरिहारपरावतार
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 14॥

बद्ध्वा गले यमभटा बहु तर्जयन्तः(ख्)
कर्षन्ति यत्र भवपाशशतैर्युतं(म्) माम् ।
एकाकिनं(म्) परवशं(ञ्) चकितं(न्) दयालो
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 15॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्ख-
मन्येन सिन्धुतनयामवलम्ब्य तिष्ठन् ।
वामेतरेण वरदाभयपद्मचिह्नं
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 16॥

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक-
व्यासादिभागवतपुङ्गवहृन्निवास ।
भक्तानुरुक्तपरिपालनपारिजात
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 17॥

संसारयूथ गजसंहतिसिंहदंष्ट्रा
भीतस्य दुष्टमैदैत्य भयङ्करेण ।
प्राणप्रयाण भवभीति निवारणेन
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 18॥

लक्ष्मीनृसिंहचरणाब्जमधुव्रतेन
स्तोत्रं कृतं(म्) शुभकरं(म्) भुवि शङ्करेण ।
ये तत्पठन्ति मनुजा हरिभक्तियुक्ता-
स्ते यान्ति तत्पदसरोजमखण्डरूपम् ॥ 19॥

आद्यन्तशून्यमजमव्ययमप्रमेय-
मादित्यरुद्रनिगमादिनुतप्रभावम् ।
त्वाम्भोधिजास्य मधुलोलुपमत्तभृङ्गीं
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 20॥

वाराह-राम-नरसिंह-रमादिकान्ता
क्रीडाविलोलविधिशूलिसूरप्रवन्द्य! ।
हंसात्मकं(म्) परमहंस विहारलीलं
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 21 ॥

स्वामी नृसिंहः(स्) सकलं(न्) नृसिंहः
माता नृसिंहश्च पिता नृसिंहः ।
भ्राता नृसिंहश्च सखा नृसिंहः
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 22 ॥

प्रह्लादमानससरोजवासभृङ्ग!
गङ्गातरङ्गधवळाङ्ग रमास्थिताङ्क! ।
शृङ्गार सुन्दरकिरीटलसद्वराङ्ग
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 23 ॥

श्री शङ्करार्य रचितं(म्) सततं(म्) मनुष्यः
स्तोत्रं(म्) पठेदिह तु सर्वगुणप्रपन्नम् ।
सद्योविमुक्तकलुषो मुनिवर्यगण्यो
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 24 ॥

श्रीमन् नृसिंह विभवे गरुडध्वजाय
तापत्रयोपशमनाय भवौषधाय ।
तृष्णादिवृश्चिक-जलाग्नि-भुजङ्ग-रोग
क्लेशव्ययाम हरये गुरवे नमस्ते ॥ 25 ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः(ख्) कृतौ लक्ष्मीनृसिंहकरावलम्बस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥